भजन

तर्ज–यूं हसरतों के दाग

खिन विरहा न सहा कभी जिसने हजूर का
क्यो जी रही है देखे बिना जलवा नूर का

1–जिस दिल को रहना चाहिये उनके ख्याल में
उस दिल से जुड़ गया है रिश्ता गुरूर का

2–रहते है बेखबर से हम उनसे इस तरह
जैसे ना वक्त देखा हो इश्के सरूर का

3–अनमोल वक्त हाथों से निकला निकल रहा
कहां खो गया असर वो अर्श के अंकूर का

4–आखिर तो हक के रुबरू होना है एक दिन
कैसे करेगी सामना उनके जहूर का